R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 24वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

शोध पत्र

www.shaharsamta.com

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

वर्ष 24 | अंक 18 | रविवार, इलाहाबाद, 22 सितंबर 2024 | पृष्ठ 6 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

संपादकीय

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

रचनाकारों की रचना में ,
मिलता है सुख का संसार ।
इसीलिए कविता को कहते ,
हृदय भाव का ही उद्गार ।

बात हो रही है महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक की । रचना के स्तर पर निरंतर निखार का नाम है रचनाधर्मिता , जिसका अनवरत पालन रचनाकारों की रचनाओं में हो रहा है। लगभग 160 के ऊपर अब तक शहर समता के विविध प्रकार के विशेषांक निकल चुके हैं, जो आज नहीं तो कल, हिंदी साहित्य के लि

ए अमूल्य धरोहर के रूप में याद किया जाएगा। पूरे भारत देश में 32 से ऊपर इकाइयां तो महिला काव्य गोष्ठी की कई वर्षों से सक्रिय हैं। जिसमें निरंतर बढ़ोतरी हो रही है। इस बार भी महिला काव्य गोष्ठी में , पुरुष काव्य गोष्ठी में पढ़ी गई कुछ रचनाकारों की रचनाएं प्राप्त हुई है, जो इस अंक में संलग्न हैं । अब इस विशेषांक में छपी हुई रचनाकारों की बानगी देखिये ।

पहली बनगी

आंसुओं को पोंछ ले,
तू गम को दरकिनार कर।
जिंदगी से प्यार कर तू,
जिंदगी से प्यार कर ।।

दूसरी बनगी

1)ये दिल मासूम है इतना शरारत भी नहीं करता,
तुम्हारे बिन किसी की अब इबादत भी नहीं करता।

तीसरी बनगी

जब दोनों दिल हिन्दुस्तानी,
तो सीने का बंटवारा कैसे।
सुख सुविधा जब सभी यहाँ,
तो जंगल ओर निहारा कैसे।

इस बार की पुरस्कृत रचना कानपुर की सीमा वर्णिका की है । इसे पढ़िए, देखिए और बताइए, कि रचना कैसी है । प्रतिक्रिया जरूर दीजिएगा।

अंत में -

आखर-आखर लिखते-लिखते ,
आखर हो गए ब्रह्म सामान ।
मानव हित की बात ही करते ,
आखर होते बहुत महान ।

उमेश श्रीवास्तव

पुरस्कृत रचना

गौरेया

आँगन की फुदकती गौरैया,
माँ मै थी तेरी सोन चिरैया ।
टूट गए सब खेल खिलौने,
गुड़िया गुड्डा बर्तन बिछौने,
बात बात पर लगती रोने,
नहीं मिलती तेरी गलबहियाँ,
माँ मैं थी तेरी सोन चिरैया ।
देहरी संग सब रिश्ते छूटे ,
व्यर्थ बातों पर रहते रूठे,
स्वप्न सभी तो निकले झूठे,
भूले सब सखी बहना भैया,
माँ मै थी तेरी सोन चिरैया ।
परी लोक की थी मैं रानी,
नानी के वो किस्से कहानी,
बिसरा अब आँखों में पानी,
गगन चूमती थी कनकइया,
माँ मैं थी तेरी सोन चिरैया ।।

-सीमा वर्णिका

कवितायेँ

अलख जगाना राष्ट्र प्रेम का

अलख जगाना राष्ट्र प्रेम का
वन्देमातरम गाना है।
भारत मां के चरणों में
नित नित शीश झुकाना है।
जहरीले काटो राहों से
दूर हटाते चलना है।
गद्दारों को मार भगाओ
अमन चैन शांति लाओ।
राष्ट्र भक्ति का भाव जगाओ
दीनो को गले लगाओ।
जहर उगलती हवाओं को
आगे नहीं बढ़ने देना।
राष्ट्र द्रोह करने बालों को
देश में नहीं रहने देना।
छलनी किया जिसने सीना
अब उनकी औकात दिखाना है।
जो शहीद हुए देश के रक्षक
उनका कर्ज उतारना है ।।

रचना सक्सेना
जबलपुर

चमक उठी तलवार

अट्ठारह सौ सन सत्तावन में,
चमक उठी पकड़े तलवार ।
पीठ बाँधकर पूत चल पड़ी ,
अंग्रेजों को दी ललकार ।।

बैठ अश्व पर लड़ने आयी ,
खूब किया सबका संहार ।
जुल्मों की आँधी ना भायी ,
रानी ने तब किया विचार ।।
अंग्रेज़ों को दूर भगाना ,
ठाना जन - जन लिया पुकार ।
पीठ बाँधकर पूत चल पड़ी ,
अंग्रेजों को दी ललकार ।।

चलीं शीश न्यौछावर करने ,
भारत की सच्ची संतान ।
शंख - नाद कर बिगुल बजाया ,
उत्साहित हो जगे जवान ।।
मार - मार कर भाल कटारी ,
हुई देश पर वो कुर्बान ।
पीठ बाँधकर पूत चल पड़ी ,
अंग्रेज़ों को दी ललकार ।।

चाल - चली तब अंग्रेजों ने ,
हिन्द बाँटकर बोया बीज ।
झुलस रहा है जन जीवन अब ,
भूल गये हम सभी तमीज ।।
रखो मान उन बलिदानों का ,
मातृभूमि पर हो बलिहार ।
पीठ बाँधकर पूत चल पड़ी ,
अंग्रेजों को दी ललकार ।।

डॉ कुमकुम शुक्ला

स्वतंत्रता

स्वतंत्रता पे अपनी हमें गर्व होना चाहिए।
अनेकता में एकता का बोध होना चाहिए।
संस्कृति, संस्कार हीं ध्येय होना चाहिए।
सहस्त्र बलिदानियों का स्मरण करते रहना चाहिए।
हैवानियत, हादसो से राष्ट्र मुक्त होना चाहिए।

भड़का रहे हैं ईर्ष्या , चिंगारी नफ़रत की लोग।
धर्म, राजनीति की आड़ में ना फसाद होने चाहिए।
फूट डालो राज करो की नीति का बहिष्कार होना चाहिए।
देश की जागीर को लुटने, बिकने से बचाना चाहिए।
तिलक, टैगोर ,सुभाष, गांधी, भगतसिंह फिर होने चाहिए।
स्वतंत्रता पर अपनी हमें गर्व होना चाहिए।
भारत माँ की आन बान का बीड़ा सबको उठाना चाहिए।

आरती शर्मा

रक्षाबंधन

नयनों से बरसे नेह सदा,
सुख -दुख संग सदा अपने।
धागे रेशम बँधें डोरी,
सतरंगी अपने सपने।।

रक्षा बंधन है सब न्यारा,
भाई -बहन संग रहते।
नटखट ये है बंधन अटूट,
भाई लाड़ सदा करते।।
चल-चल झटपट मात -पिता घर ,
भाई -भाभी है अपने।
धागे रेशम बँधें डोरी,
सतरंगी अपने सपने।।

देर रात तक हम सब खेलें ,
भाई संग सदा रातों।
माता अब यादों में रहती,
हरदम बचपन की बातों ।।
ऐसा लगता लौटे दिन फिर,
प्यारे बचपन के अपने।
धागे रेशम बँधें डोरी,
सतरंगी अपने सपने।।

उमा मिश्रा प्रीति

रक्तिम बूंदों में

कोई अल्लाह !कोई यीशु! वाहे गुरु या कहता राम।
मैं जपती हूं बस इक नाम,
मेरे भारत तुम्हें प्रणाम।
कोई जाता मंदिर ,मस्जिद गिरजाघर गुरुद्वारा।
भावों के प्रांगण में,
ढलता सुंदर बदन तुम्हारा।
मोहनी सूरत तुम्हें प्रणाम,
ख्वाबों को पंख लगे हैं। कुटियों पर भी महल सजे हैं,
सदियों साथ निभाने वाले। मेरे बरगद तुम्हें प्रणाम,
कोई सुंदर चित्र बनाता।
और गीतों से तुम्हें सजाता,
बहते हो रक्तिम बूंदों में।

महिला काव्य गोष्ठी
विशेषांक

साप्ताहिक शहर समता

कवितायेँ

मेरे गौरव तुम्हें प्रणाम,
मेरे भारत तुम्हें प्रणाम! !

अनीता दुबे
जबलपुर

जब तक जिंदा था

जब तक जिंदा था
कहाँ पूछ परख थी
दुनिया जहान से जाते ही,
कहने लगे आदमी अच्छा था!
बड़ी जल्दी चला गया!

कभी सोया नहीं चैन से,
जागता रहा नैन से
कहा नहीं बैन से!

किसी ने ना समझा
किसी ने ना जाना!

कभी कुछ कहने की
कोशिश नहीं की
कहता तो क्या समझ जाते?
जालिम जमाने वाले
हंसते मुस्कुराते!

ठहाका लगाने वाले
सरे बाजार मखौल उड़ाने वाले!

कुछ बेचारा लाचार समझकर,
कभी आंखों में अश्रु लाते!
सच्ची झूठी हमदर्दी से
बेचैनी का दिल बहलाते!
दिल तो दिल है कब तक सहलाते!

चाहा मगर चाहत को तरसे!
उठे गिरे फिर उठ कर चले,
बिन मंजिल के रास्ते भले!

चलना भी आसान कहाँ था!
कदम बढ़े पर सतरस्ते पर,

बीच भंवर में घूम घूम कर!
चौरासी के फंद छुड़ाते,
लटके त्रिशंकु बनकर,
शंका का समाधान दिखा ना!

खिलता कमल बंद था भंवरा,
खुलकर भागा नींद से जागा!

जागा कहाँ अर्ध निंद्रा में
सुप्त और चैतन्य के मध्य में,
अपने होने के सबूत में!

और थक कर सो गया अब!
मिला कब था खो गया अब!

डॉ साधना शुक्ला

कृष्ण

गीता एक विचार है ,
हर जीव साभार है।
जीवन का आभार है ,
वेदों को तो पढ़िए।

भगवदगीता मान ,
वृंदावन कृष्ण धाम,
गोकुल का अभिमान,
ग्रंथों को तो जानिए ।।

श्रीकृष्ण राधा आस है ,
पुराणों में विश्वास है ,
कृष्ण नाम चेतना है ,
दर्शन तो कीजिए।

राधा मीरा गोपी जान ,
जगत की पहचान,
राधा कृष्ण जपू नाम,
हरि को तो पूजिए।।

आशा जाकड़

चले आओ

कहे तुमसे तेरी राधा चले आओ
चले आओ ,
चले आओ के गिरधर तुम चले आओ
के सूखे उपवन तुम बिन ये ,
के सूखे ताल तुम बिन ये
इन्हें चरणों से छू जाओ चले आओ
चले आओ चले आओ के गिरधर
तुम चले आओ

रोएं जमुना के किनारे,
रोएं वृंदावन की गलियां
के इनको तुम हंसा जाओ, चले आओ
चले आओ,
चले आओ के गिरधर तुम चले आओ

पुकारे माखन की मटकी ,
पुकारे बृज की हर गोपी
के उनको सपने दिखा जाओ, चले आओ
चले आओ,
चले आओ के गिरधर तुम चले आओ

पुकारे तुमको ये अंखियां ,
पुकारे तुमको सब सखियां
के झिलमिल हो जाएगी अंखियां ,चले आओ
चले आओ,
चले आओ के गिरधर तुम चले आओ।

रीना प्रदीप कुमार

सावधान हो पिशाच

सावधान हो पिशाच
'नारी अबला
कब तक रहेगी
पापी दुनिया।

कैसे सहेगी
जुल्म बहशियों का
ईश्वर बता।

अंधा समाज
देख नही रहा है
नारी दुर्दशा।

सशक्त नारी
करदे सर्वनाश
पापी नर का।

पर अकेली
कैसे कर पायेगी
वो ये सहन।

शर्मसार है
अब सारी दुनिया
कुकृत्यों से।

सरेआम हो
कत्ल बहशियों का
समाज करे।

कानून अंधा
राजनीति कुटिल
पिस रही नारी।

जलादो इसे
लो मशाल हाथ में
विध्वंस करो।

बहुत सहा
अब ना सहेगी वो
बनेगी ज्वाला।

राख बनेगा
अब नर पिशाच
सावधान हो!'

आभा माहेश्वरी
नजीबाबाद

मौनता में खड़ा मनुज

मौनता में खड़ा मनुज ,
मौनता में ताकता ।
देख अपनी ओर,
क्यों नहीं धिक्कारता।
है धरा पर क्यों,
अश्रु बीज बो रहा ।
अबला अश्रु से
निज धरा डुबो रहा ।
बढ़ रहे हैं धरा पर ,
कलुषित क्लेश मन ।
जाने कितनी सुताओ के,
नग्न हो रहे हैं तन ।
निज नीर आसुँओं से ,
मुख निर पखारती।
तार-तार चीर से,
नग्न देह को ढापती।
कंठ में सुधा नहीं ,
रुधिर धमनी बचा नहीं।
सांसों में रिक्तता ,
आत्मदेह विरक्तता।
ठहर मनुज रुक यहीं ,
ठहर मनुज रुक यहीं

अर्चना चौहान
किरतपुर बिजनौर

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

मेरे देश में चल रहा है अभियान,
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ,
बनेगा भारत महान।
बड़े जोर शोर से नारे लगवाए जाते
और रैलियां निकलवायी जाती हैं नेता
अधिकारी गण फोटो शूट कराते
फूले नहीं समाते हैं
नीचे से ऊपर तक सब करते आह्वान,
मेरा देश महान,मेरा भारत महान।
उसी देश में कभी निर्भया
तो कभी होता अभया कांड।
गांव देहातो की तो बात ही क्या,
अनपढ़ बिटियों की बात ही क्या,
डिग्री धारी नहीं सुरक्षित ,
क्या डाक्टर क्या पहलवान,
मेरा देश महान, मेरा भारत महान।

मंजु गुप्ता
बिजनौर

गीत

आंसुओं को पोंछ ले,
तू गम को दरकिनार कर।
जिंदगी से प्यार कर तू,
जिंदगी से प्यार कर ।।

लोग गिर गए हैं जो उन्हें उठा, तू आगे बढ़ ।
दोराहे पर खड़े हुए उन्हें बढ़ा,तू आगे बढ़।
खुद भी संवर जाएगा तू ,
औरों को संवार कर
जिंदगी से प्यार कर तू,
जिंदगी से प्यार कर ।।

जिंदगी में देख लोग,
क्या से क्या हैं कर गए।
ऐसे भी चिराग हैं, तूफानों से गुजर गए।
बेबसी के दौर में क्यों, बैठ गया हार कर ।
जिंदगी से प्यार कर तू
जिंदगी से प्यार कर।।

छोड़ कर गए हैं जो, ना लौटकर वो आएंगे ।
बरबादियां वो देख तेरी,गम ही तो गम पाएंगे
बुझदिली ये छोड़ दे
तू खुद पर एतबार कर ।
जिंदगी से प्यार कर
तू जिंदगी से प्यार कर।।

जब जब तुझे रुलाएगी बेकसी और बेबसी
हाथ तेरा थामने को आएगी फिर रोशनी।
रूप तेरा सामने वो,लाएगी निखार कर।
जिंदगी से प्यार कर तू,
जिंदगी से प्यार कर।।

गम और खुशी के रास्ते,
हैं हर किसी के वास्ते ।
क्या हुआ तुझको मिले कांटो भरे जो रास्ते।
मंजिलों के वास्ते तू ,मुश्किलों को पार कर।
जिंदगी से प्यार कर तू,
जिंदगी से प्यार कर।।

गम के साये दूर कर ,
तू जिंदगी को यूं हंसा।
दूसरों के वास्ते तू,खुद को भी तो भूल जा ।
प्यार सबको बांटकर,
तू प्यार की दरकार कर।
जिंदगी से प्यार कर तू,
जिंदगी से प्यार कर।।

प्रो0 पूनम चौहान
धामपुर बिजनौर

बदली

मैं एक बदली!
कुछ आवारा, कुछ पगली सी
जाना कहां है ,
मालूम नहीं
मंजिल कहां है
मालूम नहीं
चल पडूंगी
उस ओर
ले जाए हवा का झोंका
जिस ओर!

जाने !
क्या लिखा है तकदीर में मेरी
जाने ,क्या रंग दिखाएगी नियति मेरी
क्या जाने ,
किसकी प्यास बुझाऊं
या बिजली बन लोगों के दिल धडकाऊं
या, यहीं कहीं नभ में ना कहीं खो जाऊं
अपनी विवशता ,
अपनी बेचैनी किसे दिखाऊं
हां ! मैं एक बदली
कुछ आवारा कुछ पगली सी ।

सुमन चौधरी 'सुमन'

नहीं डरेगा कोई उससे

नहीं डरेगा कोई उससे,
जिस पर कंठी माला हो।
तभी त्रिपुण्ड सजेगा माथे ,
जब हाथों में भाला हो।

सर से ऊँचा जब चढ़ जाए,
पानी भी स्वीकार नहीं,
सत्य अहिंसा पर चलते हैं,
किन्तु हुए लाचार नहीं।
धर्म ध्वजा के वाहक हैं हम,
करते अत्याचार नहीं।
करुणा तभी सुशोभित हो जब,
हृदय धधकती ज्वाला हो।
हमने शेरों के दाँत गिने ,
हमसे विषधर हैं हारे।
शास्त्र धर्म की रक्षा हेतु,
शस्त्र राष्ट्र रक्षा धारे ।
महल छोड़कर जंगल जंगल,
फिरते थे मारे मारे,
आए धर्म क्षेत्र में वह ही,
जो उसका रखवाला हो।

विषपान किया था कर लेंगे,
मानवता की रक्षा को।
मत छेड़ो के विषधर हैं हम,
सजग सदा प्रतिरक्षा को।
आजादी की धुन के पक्के,
करे उपाय सुरक्षा को।
मिटने को तैयार देश पर,
गोरा हो या काला हो।

ऋतुबाला रस्तोगी

गीत

मैं तो नहीं हूं राधा न ही मीरा न ही रुक्मिणी
मैं हूं पुजारिन चरणों की
मन में मेरे है गोपाला नंदलाला मुरली वाला
जग में है सबसे निराला मूरलीवाला।
मुरली तुम्हारी सुन के हुआ मन मेरा
मतवाला।
मैं गीत गाऊं तेरे पीकर के प्रेम प्याला
कहती है सारी दुनियां हुई मैं तेरी दीवानी
कान्हा मैं दासी तेरी
दर्शन की अंखियां प्यासी
मन श्याम मय हुआ तूने है जादू डाला

प्रेमा राय

नवल प्रभा का स्वागत करिए

नवल प्रभा का स्वागत करिए।
खोल उनींदी आँखों को अब,
प्राणों में नव जीवन भरिए।।

स्वप्न अधूरे आँखों में हो,
क्षोभ हृदय का सारा हरिए।
कलरव करते पंछी जैसे,
पंख खोल उम्मीदें भरिए।।

हिय में जो संताप भरा हो,
तो फिर नीरसता से बचिए।
कली डाल पर झूमे जैसे,
गीत प्रीत का ऐसे रचिए।।

पथ के कंटक ठोकर देते,
मंजिल पाना विष भी चखिए।
चहुँ दिश फैला दिखे उजाला,
आस किरण की मन में रखिए।।

पवन सन्दली भरे ताजगी,
भाव शुद्ध यूँ हिय में भरिए।
सूरज जैसे चमके नभ में,
जल- जल जग को रौशन करिए।।

रचना सक्सेना
प्रयागराज

गर चाहते हो तुम

गर चाहते हो तुम
कि हर बगिया की
कली खिलती रहे
हर आंगन में
हँसी खुशहाली पलती रहे
फिर मत पैदा करना तुम
उस जैसा व्यभिचारी
घर का पुत्र, पति, पिता,भाई
समाज में है बलात्कारी।

गर चाहते हो तुम
बेटी पढ़े और आगे बढ़े ,
अपने हर पल को जिये
सपनों को साकार करे
तो मार डालना कोख में ही
ऐसे पुरुष के भ्रूण को
बहुत मरी है ये भ्रूण में
अब है तुम्हारी बारी
घर का पुत्र, पति, पिता,भाई
समाज में है बलात्कारी।

गर भूल से बच भी जाये
तो रखना कैद कर उन्हें
हर कायदा, ऊंच नीच का
सिखाना बैठ कर उन्हें
सदियों से इसी कायदे में
जीती रही है बेचारी
घर का पुत्र, पति, पिता,भाई
समाज में है बलात्कारी।

गर चाहते हो तुम
बची रहे भू पर बेटियाँ
तो स्मरण रहे तुम्हे
पालना उन्हे जैसे
राम, कृष्ण, बुद्ध, विवेका
परस्त्री में जिन्होंने
माँ, अनुजा,पुत्री ही देखा
मात-पिता के संस्कार से
बने वह संस्कारी
घर का पुत्र, पति, पिता,भाई
समाज में है बलात्कारी।

डॉ.मंजू प्रकाश

मातृशक्ति का ये अपमान ?

जन्म लिया मां- बाप नहीं खुश,
नाना - नानी ननिहाल नहीं खुश,
विद्यालय गई समाज नहीं खुश,
बढ़ती गई नित नई बुलंदियों के साथ,
लक्ष्य भी चुना नव उल्लासों के साथ ,
कई झोंके सताने थे आए मुझे,
फिर भी मैं न डिगी वे गए लौट थे,
किया मेहनत था पूरे मनोयोग से,
लक्ष्य भी मिल गया मिली मंजिल भी थी
छाई खुशियाँ थीं मां- बाप के मुख पे भी,
मन में खुशियाँ लिए रत रही काम में,
दिल में सपने सजाए थी अरमानों के,
रात घनघोर थी ऐसी आँधी चली,
निद्रा आते ही दानव से मैं जा घिरी,
मरते दम तक मैं उससे लड़ी फिर लड़ी,
था कोई न निकट चीख चिल्ला रही,
आई अंतिम घड़ी छोड़ सब मैं चली,
'अब न लिखने की मुझमें सामर्थ्य ही रही,
दर्द दिल में बहुत कलम डगमगा रही। '

अनामिका तिवारी 'अन्नपूर्णा'

तुझसे रूठी हूँ

तुझसे रूठी हूँ तुझे आके मनाना तो होगा
करते हो कितनी मोहब्बत
ये बताना तो होगा
मोहब्बत की ये राहें कहाँ होती है आसां
पर इनको भी तुम्हें आखिर निभाना तो होगा
मैं जानती हूँ तुम मुझे मना तो लोगे ही
मुझसे झूठी नाराज़गी दिखा सताना तो होगा
तुम करोगे इक़रार मैं जानती हूँ इक़ दिन
पर कुछ गुलाब देकर मुझे रिझाना तो होगा
पलकों तले पनप रहे हैं कई हसीन सपने
इन ख्वाबों से मुझे आके जगाना तो होगा

अवंतिका विशाल'अवि'

प्रणय गीत रच करकमलों से

प्रणय गीत रच करकमलों से,
मैंने निज बंधन से बाँधे।
आशा दीप जलाकर मैंने
सुंदर कलश हृदय पर साधे।

मूक मंत्र की मधुरिम लहरी,
मन तारों को झंकृत करती।
श्वेत वसन आच्छादित होकर,
आत्म चेतना मंथन करती।
सघन गहन मन चेतन वाणी,
मौन शब्द स्वर चिंतन साधे।
आशा........

विस्तृत जीवन व्याप्त निराशा,
अपलक दृष्टि बनी शुभचिंतक।
गरिमामयी रूप मदमाती,
यौवन गागर छलकी निश्छल।
भाव बने प्रज्ज्वलित ज्योति।
नव जीवन देती शुभ राधे।
आशा.........

आ जाना सपनों की नगरी,
दस्तक पथिक सजी ये देहरी।
पुष्पित अब भी यौवन
कलियाँ,
बंदनवार बंधे इस पहरी।
द्वार सजाओ,
सजी दुल्हनियां,
रक्तिम आभा मुख पर साजे।
आशा.........

प्रवीणा त्रिवेदी 'प्रज्ञा'
नई दिल्ली

हिंदी पूछ रही है प्रश्न सबसे

राजभाषा हिंदी पूछ रही है सबसे आज
किस कारण सब गिराते सिर पर गाज।
आधुनिकता के फेर में फैले कैसे घनेरे
बोलो, कब अंत होंगे अंग्रेज़ी के डेरे।।

निज देश में प्रतिदिन मेरी दुर्गति होती
घर में दुबककर बैठी मैं सदा ही रोती।
सभ्यता-संस्कार सब इस कारण टूटे
सरस-सरल मुझसे क्यों अब नाते छूटे।।

विश्व पटल में मैंने ही परचम लहराया
विवेकानंद-अटल ने मेरा मान बढ़ाया।
दिनकर-प्रेमचंद को मेरे कारण जाना
फिर क्यों गँवार कह देते रहते ताना।।

सबसे वैज्ञानिक भाषा मैं ही कहलाती
जैसा लिखते वैसा बोलना सिखाती।
क्यों हिंदी दिवस मना जख्म के हैं फेरे
कहीं खत्म न हो जाएँ सदा हिंदी-घेरे।।

अर्चना कोहली 'अर्चि'
नोएडा (उत्तर प्रदेश)

कवितायेँ

आसान कहां थी आजादी

आसान कहां थी आजादी,पर पाई हमने आजादी।
जन धन की भारी कीमत दे सदियों में पाई आजादी।।
बलि वेदी पर भारत के आहुति दे कर अपने प्राणों की ।
पिता पति भाई बेटे कुर्बां कर हमने पाई आजादी।।

मनोरमा श्रीवास्तव 'मनोरम'

गीत

देश है पहचान मेरी,रज तिलक माथे लगाऊँ।
पुण्य मिलता है सदा ही शीश नित नित मैं नवाऊँ।

धमनियों में वीरता बहती लहू बन कर जहाँ पर।
शौर्य गाथा शूरता से नित नई बनती यहाँ पर।
एक भारत देश अलबेला अखण्डित इस धरा पर।
ओज कण कण में बसा है देव मण्डित इस धरा पर।
मैं उसी पावन धरा के नित नवेले गीत गाऊँ।

भाग्य श्रम के बिंदुओं से,ही चमकता है सदा बस।
हर कसौटी पर स्वयं को वो परखता है सदा बस।
प्रेम- धारा विश्व में है, रात दिन हर पल बहाई।
रीत मेरे देश ने यह ,हर कदम सबको सिखाई।
ऐषणा मन में बसी है, मान इसका मैं बढाऊँ।

चहुँ दिशा में फैलती हैं, खुशबुएँ सौहार्द की अब
भिन्न होकर भी बँधे हैं, एकता की माल में सब
देश का उपवन खिला है, ऋतु बसंती छा रही है।
देश की अनुपम छटा ये,हर किसी को भा रही है।
छवि विहंगम नित्य ही मैं, देश की निज उर बसाऊँ।

अनीता सिंह'अनु'

गौरेया

आँगन की फुदकती गौरैया,
माँ मै थी तेरी सोन चिरैया ।
टूट गए सब खेल खिलौने,
गुड़िया गुड्डा बर्तन बिछौने,
बात बात पर लगती रोने,
नहीं मिलती तेरी गलबहियाँ,
माँ मैं थी तेरी सोन चिरैया ।
देहरी संग सब रिश्ते छूटे ,
व्यर्थ बातों पर रहते रूठे,
स्वप्न सभी तो निकले झूठे,
भूले सब सखी बहना भैया,
माँ मै थी तेरी सोन चिरैया ।
परी लोक की थी मैं रानी,
नानी के वो किस्से कहानी,
बिसरा अब आँखों में पानी,
गगन चूमती थी कनकइया,
माँ मैं थी तेरी सोन चिरैया ।।

सीमा वर्णिका

सुख दुख

सुख दुख दोनों हैं सगे बन्धु, बारी बारी से आते हैं।
अनुबंधित तुमसे होते हैं, अपनी पारी दोहराते हैं। हर
एक की अदा अलग होती, ये अपना रंग दिखाते हैं। नित
तुम्हे उमंगित करते हैं, करना ये जंग सिखाते हैं।
सुख का स्वागत करते जैसे दुख को भी गले लगा लेना।
दुख मीत तुम्हारा आला है, दिल दे के इसे लुभा लेना।
देता है सुख खुल्लम खुल्ला, छुप छुप करके दुख देता है।
मधुशाया मे सुख है सेवक, दुख तपी धूप मे सेता है।
सुख न्यौता देता है दुख का,
सुख सच ही दुख का दाता है।
मन मत कर दुख से तू चिंता,
दुख ही सुख का निर्माता है।
इससे रहता है खुश संतत, उससे पल पल पछताता है।
इस, उस, का चक्कर त्यागो तुम
मुरली वाला मुस्काता है।
दुख सुख मे जो सम भाव रहा,
आनंद असल वो पाता है।
देखो कीचड़ की गोंदी मे, खिल कमल बुलंदि दिखाता है।

पूनम पांडेय

तुझमें ही खो जाऊँ कन्हैया

कन्हैया तुझमें ही खो जाना में चाहूँ।
तेरी धड़कनों में बस जाना में चाहूँ।।
तेरी सांवरी सलौनी भोली सूरत में,
सारी ही दुनिया को में भूलना चाहूँ।
अपने जीवन का हर एक पल-पल,
तेरे साथ ही रहकर में जीना चाहूँ।
यह दुनिया हर-पल एक छलावा है,
तुमको जीवन का मीत में बनाना चाहूँ।
मुझको पथ में चलना है साथ तेरे,
तुमको अपनी श्वांसे में बनाना चाहूँ।
तुम ही मेरी पूजा, तुम ही बसे दिल में,
तुम्हारी पुजारिन कान्हा में बनना चाहूँ।
तेरे लिए ही व्याकुल रहती में बावरी,
तेरे होठों की मुरलिया में बनना चाहूँ।
यमुना के तट में सखियों के साथ जाती
पर मैं हर पल तुम्हारे साथ रहना चाहूँ!!
कन्हैया तुझमें ही खो जाना में चाहूँ ----

सुषमा सिंहङउर्मि

गज़ल

1)ये दिल मासूम है इतना शरारत भी नहीं करता,
तुम्हारे बिन किसी की अब इबादत भी नहीं करता।
2)कभी आओ हमारे दिल में ओ हमदम ज़रा ठहरो,
बड़ा ज़ालिम है वो यारों कि शिरक़त भी नहीं करता।
3)नहीं लालच है मेरे यार को मशहूर हो जाए,
वो दुनिया भर की दौलत की हिफ़ाज़त भी नहीं करता।
4)बड़ा ज़ालिम ज़माना ये बिके ईमान है देखो,
मैं सच्चा हूँ मेरी कोई वकालत भी नहीं करता ।
5)बहुत शिक़वा है लोगों को ज़माने भर में मुझसे पर,
मेरा दिलबर न जाने क्यूँ शिकायत भी नहीं करता ।
6)है सच्चाई की मूरत और भोला है मेरा हमदम,
दिखे अय्यार कोई तो तिज़ारत भी नहीं करता।
7)उसे है पूजती 'श्रद्धा'उसी से प्यार करती है,
न जाने क्यूँ सनम मुझसे मुहब्बत भी नहीं करता।

श्रद्धा श्रीवास्तव

कृष्ण तेरे चरण

कृष्ण तेरे चरण
कर लें दुख का हरण
तिरछे तेरे नयन
प्रीत मेरी सघन
हो गया मन पावन सा वृंदावन
कृष्ण तेरे चरण-------
रंग अपने तू रंग
ले मेरे साँवरे
क्यूँ रूठा है तू
ओ मेरे बावरे
जाने क्या तुझ को सूझी
उम्मीदें बुझीं
हम से कर लो मिलन
ओ मेरे साँवरे
कृष्ण तेरे चरण-------
आजा-आजा कन्हैया
मेरे द्वारे
कब से राधे तेरी
मधुबन ठारे
बंसी धुन तू सुना
मुरली पे नचा
प्राण मेरे विकल हैं
मेरे साँवरे
कृष्ण तेरे चरण--------

प्रो. रश्मि झा

मैं बंसरी तुम्हारी

तुम श्याम बनके आ जा।
अकेली राधिका के
घनश्याम बन के आ जा।
देखो तुम्हारी सीता
बैठी अशोक वन में।
आठों पहर तुम्हारा
रखती है ध्यान मन में।
सीता के प्रभु धनुधर श्री राम बन के आ जा
अकेली राधिका के घनश्याम बन आ जा।

------ चांदनी रातों की बातें

मत पूछो चांदनी रातों की बातें
वो चांद से मुलाकात की रातें
आज भी मन मधुर यादों में खो जाता है
बहुत ही लुभावनी और सुहानी होती है
आसमां मैं चमकते ये चांद और सितारे
मन को कर देते हैं उजियारे
वो लम्हें आज भी मुझे याद है
वह लम्हें भुलाए नहीं कभी भूल सकती
जब दादा -दादी मुझे चांदनी रातों में
आंगन में खाट पर बिठाकर अपने संग
मुझे आसमां में चांद को दिखाते
चुप हो जा लाडली चांद मां तुझे बुला रहे हैं
तुझे चांद की सैर कराएंगे
चंद मामा तुम्हें कटोरी में दूध -भात खिलाएंगे
वो तुमसे मिलने आएंगे तुझे साथ ले जाएंगे
मैं चाहे जितना गुस्सा करूं
चंद मामा की बातों से मेरा गुस्सा यूं
झट से गायब हो जाता
चांद की सैर करने को दिल मचल उठता
चांद मामा अपनी रुपहली चांदनी से
नहला रहे हैं
मम्मी -पापा गोद में बिठाकर चंद मामा के पास ले जाने
की बातें करके फुसलाते
कैसे भूलूं..? वो चांदनी रातों की बातें
जब कुछ सयानी हुई तो चांद में
हमसफर की तलाश करने लगी
वो मोहब्बत के लम्हें
जिसमें डूब जाना है इबादत
एक शिद्दत से मिलने की जद्दोजहद
फिर एक दूजे खो जाना
चांदनी रातों में चांद से बातें करना
चांद भी चांदनी में अपने पूरे शबाब
के संग धवल प्रकाश बिखेरता हुआ
मानों प्रेमगीत छेड़ जाता है
चांद पर दाग बहुत कुछ कह जाते हैं
अफसाने
हौले -हौले से मेरे तन -मन में
अजीब सी हलचल लगा है मचाने
सच, चांद भी क्या सितम ढाता है
प्रणय के बंधन में बढ़ने को मजबूर करता है
चांदनी रातों की बातें है अनूठी
चाहे जितना कर लो होती नहीं पूरी

डॉ मीना कुमारी परिहार

पिता

तुम थे मेरे जन्मदाता
प्राण वायु के प्रदाता
शब्दों के तुम ज्ञान दाता
तुमने अभिव्यक्ति की क़लम से
संवेदनाओं की राह में,
भाव की स्याही में डुबोकर
कलम से कागज पर
अक्षरों को जोड़ना, घटाना
बार- बार लिखाना मिटाना
फिर दोहराना, सिखाया
जब अक्षरों ने साकार रूप ले लिया
क़लम ने परिपक्वता का अपना परिचय दे दिया
कुछ बिखरे शब्दों ने एक नया रूप ले लिया
बिखरे हुए कलाम को मिला क़लम का सहारा
तुम नहीं किसको बतायें कितनी बार लिखें-और मिटायें
अक्षरों का ज्ञान किसको दिखायें किसको पढ़ायें
कलम की तो बात है पर
तुम नहीं हो ह्रदय में आघात है
कुछ शब्द कागज़ पर उकेरे मेरी कलम ने
धूमिल से हो रहे हैं पुरानी डायरी में
भावनाएं फूट पड़ी भाव से बिखर गयीं
अश्रु बनकर बह गये डायरी के पृष्ठ पर
कुछ चित्र सा उभरा नज़र आ रहा है
शायद तुम ही तो हो
मेरी क़लम की पहचान हो
जिसके ह्रदय का अंश हूँ मैं
मेरे प्राण वायु के प्रदाता
तुम ही मेरी क़लम मेरा कलाम हो ।।

यामा शर्मा 'उमेश'
देहरादून

पथ में सुमन बिछाए हैं

आ जाओ घनश्याम मेरे
आँखों में अश्क़ भर आए हैं,
तुझसे पाली उम्मीदों के
ङपथ में सुमन बिछाए हैंङ

पूजन अर्चन हे मेरे कान्हा
कुछ भी करना न जानूँ मैं,
तुझसे लगन लगी है मेरी
केवल इतना ही जानूँ मैं

दर्शन दोगे तर जाऊँगी
इतना है विश्वास मुझे,
बोलो मेरे कृष्ण कन्हैया
करोगे न भव से पार मुझे

ये सुंदर कोमल चरण तेरे
मेरे हृदय में समाए हैं,
कहीं काँटा न चुभे कोई
इसलिए पथ में सुमन बिछाए है

'नीलोफ़र '

ग़ज़ल

काली हर रात के बाद सवेरा होगा।
मेरी आँखों मे भी एक ख्याब सुनहरा होगा।।

तंज़ के तीर चलाये हैं सदा अपनो ने।
सोचा ना था मेरे साथ भी ऐसा होगा।।

तीरगी का असर रात को गहरा होगा।
रोशनी खत्म न कर आगे अंधेरा होगा।।

हर घड़ी रंग बदलते हैं ज़माने वाले।
ये ज़माना तो ना तेरा था न मेरा होगा।।

उम्र भर कौन चलता है भला साथ किसी के।
वक़्त बुरा हो तो साथ साया भी ना अपना होगा।।

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धम्तरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक) के वार्षिक एवं तीन वर्षीय सदस्य बनें।

वार्षिक सदस्यता के लिए -200/- **तीन वर्षीय सदस्यता के लिए -500/-**

कृपया 'शहर समता' के नाम से चेक या आनलाइन भेज सकते है।

IFSC Code- PUNB0100120 A/c.-1001050011592

व्यवस्थापक
शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक)
289/238 ए (अनंत भवन) कर्नलगंज ,इलाहाबाद-211002

पीडीफ़ के लिए
shaharsamta.
blogspot.com
पर जाएँ ।

संस्थापक

स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332
Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

कवितायेँ

अंधेरे ही लिखे हैं गर किस्मत में अज़ीज़।
ऐसे हालात में कौन यहाँ मेरा होगा।।

अफ़रोज़ अज़ीज़

एक करुण पुकार

नटखट रास रसैया का
जन्म दिन मना रहे हैं हम सब।
चारों ओर उत्सव है छाया
संग जन्माष्टमी का त्योहार है लाया,
इस पावन पर्व पर सब का है मन हर्षाया।
रास रसैया के स्वागत में,
सज रहें हैं घर-बार हाट-बाज़ार सभी।
बाल-बालाएँ,वृद्ध-वृद्धा के संग
घर-घर मंदिर सजा रहें हैं हम
नन्हें नन्हें कृष्ण राधा की झलकी, घर-घर
धूम मचा रही है आज।
हर माँ ,हर बहना,हर भाभी, मौसी भी
अपने-अपने कान्हा को सजा रहीं हैं ।
गोपियाँ ,राधा,देवी ,कोमल,
शुभ्रा
पुकार रहीं हैं तन-मन से आज
आकर दर्श दिखा दो कान्हा
संकट- विपदा में पड़ी तडफ
रही है घर-घर हर नारी आज।
आकर दर्श दिखा दो भगवान
दुष्टों पर सुदर्शन चक्र चला दो भगवान
पाप बढ़ रहें हैं धरती पर
मानें अंधियारा निगल रहा है अब
नारी की करुण चीत्कारों से
चारों दिशायें बिलख रहीं हैं ।
आ भी जाओ अब आ भी जाओ
जन-जन की करुण पुकार यही है ।
सिसक रही हैं घर घर माँए
बिलख रही है भारत माँ भी आज।
अब आ भी जाओ इस धरती पर
सबला नारी भी अब अबला बन
दरिंदों के चंगुल में दम तोड़ रही है
द्रौपदी के चीर बढ़ाने वाले
कान्हा जल्दी आओ ना
हे पोषक जल्दी आओ ना
सुदर्शन चक्र चला कर
सब के गिरते आँसू थानों ना
आना ही होगा तुमको तुमको
हे भगवन।सबला अबला की लाज बचानी
ही होगी
इस जन्माष्टमी में जन्म लेकर
रहना ही होगा तुम को यहीं
कलियुग में सतयुग को लाना ही होगा
भगवन
लाना ही होगा भगवन'

पुष्प लता भटनागर

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव

कृष्ण जन्म की, शुभ बेला आई,
घर -घर, बजे रे बधाई.....,
आज जन्मे है ,कृष्ण कन्हाई....,
नंद घर बंटे, रे बधाई.....।

आठवां पुत्र काल है तेरा,
कंस को आकाशवाणी ने घैरा,
बहन देवकी थी जान से प्यारी,
तालों में बंद कर कारागार में गेरा।
करने लगा आठवी संतान का,
इंतजार कंस भाई,
कि घर-घर बंट रे बधाई....

कृष्ण जन्म की शुभ बेला आई....,
नंद घर बैठे रे बधाई..
कृष्ण जन्म की शुभ बेला आई
सो गये कारागार में सब भाई...,
आज जन्मे है कृष्ण कन्हाई...
हथकड़ियां सब खुल गई भाई...।

अष्टमी तिथि है अति शुभकारी,
जन्म लियो है कृष्ण मुरारी।
मध्य रात्रि में प्रकट हुए हैं..,
देवकी मां को दरस दिए हैं..
कान्हा की कैसी लीला है छाई,
के जन्मे है कृष्ण कन्हाई...।

वासुदेव जी कान्हा को लेकर,
नंद बाबा के घर को चल दिए,
यमुना जी भी थी उफान पर आई,
शेषनाग प्रभु को छाया देते।
यमुना जी पग छूने को मचलती भाई..
के नंद घर बटे बधाई....

कृष्ण जन्म की शुभ जुलाई..

गोकुल में वासुदेव जी नंद घर आए,
यशोदा के संग लाल को सुलाए।
मंद मंद कान्हा मुस्काए..,
गोकुल में देखो खुशियां छाई..
के नंद घर बैठे रे बधाई....

नंद जी के अंगना शोर मच गयो.
लाला को देखो जन्म हो गयो।
यशोदा मां लेती कान्हा की बलाई,
ग्वाल बाल सब, मांग रहे हैं बधाई।

कृष्ण जन्म की शुभ बेला आई
घर -घर बजे रे बधाई.....

रंजना बिनानी 'काव्या'
गोलाघाट असम

कृष्णा

गोकुल में चमके मथुरा के तारे
आए अंधेरी रात को करन उजियारे
पिता वासुदेव संग चले जमुना किनारे
देख चढ़ी जमुना चरण पानी में उतारे !

जमुना ने रस्ता दिया पहले चरण पखारे
कहने लगी गोकुल को जाओ लिए नाथ प्यारे
यशोदा के पालने में सोए खेले खेल न्यारे
न्यारे
फेंकी जमुना में गेंद और कालिया को मारे !

बंसी मधुर बजाए माखन चुराए खाए
मटकिया फोड़े गोपियों संग रास रचाए
माटी खाय माँ यशोदा को ब्रह्मांड दिखाए
गीता के बहाने हमको जीवन का ज्ञान
बताए !

हे गिरधर हमको चरणों में रखना
हम तो अधम है ना हमको परखना
हम तो ना मीरा है और ना ही राधा
देना सदा भक्ति कर लो आज वादा !

सीमा सिंघी
गोलाघाट असम

काफिला चल रहा था

काफिला चल रहा था
और चल रहा था
हँसी -मजाक ,बताना बतियाना भी
आगे क्या होनेवाला है किसे पता था?
कोई खुश थे, छुट्टी मिलने वाली थी।
कोई छुट्टी बिताकर आया था ,
अनुभवों को साझा कर रहा था
आँखों में थोड़ी उदासी थी
घर में अपनों को छोड़ आया धा।
बिताकर आए एक एक पल याद आ रहा था
मोबाइल में तस्बीरे कैद थीं
घड़ी घड़ी निकाल कर देख रहा था ।
काफिला चल रहा था ।
कोई कोई फोन में लगे थे
अपने अपने मतलब की बातें कर रहे थे
' दो महीने की छुट्टी है,घर आउंगा'
चार धामका दर्शन कराऊँगा
लौटकर घर की मरम्मत कराउंगा।
फिर अगला बैसाख में छुटकी की शादी
पक्की
सम्झो।
दूसरी तरफ अम्मा बाबूजी थे
बार बार आशीष दे रहे थे।
कोई बार बार मुस्कुरा रहा था
आँखों में सुरुर छायाहुआ था
महबुबा से बातें हो रही थीं
जिंदगी साथ निभाने का वादा कर रहा था।
कोई मोबाईल को चुम रहा था
एक शिशु कुनमुना रहा था
नवजात संतान थी ,
जिसे रूबरू देखा न था
काफिला चल रहा था ।
आगे क्या होगा किसे पता था?
काफिला चल रहा था कर्तव्य बोध लेकर
गंतव्य स्थल पर।
काफिला चल रहा था जम्मू-कश्मीर के
राजमार्ग पर।
आगे क्या होगा किसे पता था?
दूष्मन ने जाल बिछाया था,
गोरीपुरा में विस्फोट बिछाया था
किसे पता था?
धड़ाम! एक भयानक विस्फोट से
थर्राया था सारा पुलवामा
थर्राया था सारा देश,
एकसाथ चौवालीस जवान शहीद हो गए थे
सारे अरमान,प्यार-मुहब्बत,कस्मे वादे
चिथड़े चिथड़े हो गए थे।
उजड़ गए थे परिवार
खो दिया था किसीने बेटा, किसीने पिता
,किसीने भाई,किसीने सुहागको।
भारत माँ ने खो दिया था चौवालीस
सपूतोंको।
वह दिन बड़ा ही मनहूस था
सन 2019 का 14 फरवारी का दिन था ।
काफिला चल रहा था।
काफिले और भी चलते रहेंगे।

गीता लिम्बू
शिलांग

जय जवान जय किसान

देश की धरती खूब़ फली है खेतों और
खलिहानों से,
खिले हुए चेहरे हैं प्यारे मस्त मगन किसानों
के।
गले की घंटियां बैलों की,कोयल की मधुर
है आवाजें,
फूलों की कलियां भोर विभोर हैं भंवरों के
इन गानों से।
इस धरती ने पैदा किया देश के वीर जवानों
को,
धरती मेरी गौरवान्वित है वीर सपूतों के
बलिदानों से।
वंदन अभिनंदन नमन है मेरे वीर किसानों
को,
मेहनत जिनकी रंग लाई फसलों के खिल
जाने से।
अर्पित हैं श्रद्धा सुमन आज़ादी के उन वीरों
को,
लड़ते लड़ते दुश्मन पर गाज गिरी बल
वानों से।
सो रहे थे चैन से सब ,ये जाग रहे थे
हथियार लिए,
वर्णित है इतिहास हमारा गाथाओं की इन
दीवानों से।
रक्त बहाया वीरों ने किया हिमालय
अभिषेक,
तब लहराया तिरंगा अपना नव अभिनव
श्रृंगारों से।
दोनों ने फ़र्ज़ निभाया बढ़ाया देश का मान,
चहूं ओर तब गूंजा नारा,जय जवान जय
किसान
देश के इन परवानों का,देश के इन परवानों
का।

सुनीता भट्ट गोजा

कैसे बचाएं बेटियों को

क्यों पढ़ाएं बेटियों को,
कैसे बचाएं बेटियों को,
जब अपना ही कोई नोचेगा उसे,
क्षत विक्षिप्त करेगा उसकी देह ,
लूटेगा उसकी आबरू,
किसे कहेगी अपना,
किसपर करेगी संदेह।
क्यों मर गया है आदमी का चरित्र,
क्यों मर गई है उसकी आत्मा,
कैसे आते हैं इतने विकृत विचार,
कौन पूछेगा उससे,
कौन देगा सजा,
क्या सजा देने मात्र से,
मिल जायेगी आजादी जीने की,
आगे बढ़ने के,
स्वछंद विचरने की,
कौन देगा उसे ये आजादी,
कब मिलेगी उसे ये आजादी।
कब दहलेगा पिचाश ह्रदय,
कब कांपेंगी उसकी आत्मा,
कब जागेगा समाज,
कब मांगेगा हिसाब,
क्या सदा हर बेटी को
डर डर के जीना होगा,
क्या हर किसीको ये गरल पीना होगा।
हे कृष्ण! कब आओगे,
कब इन अनगिनत नरपिचाचों से इस धरा
को मुक्ति दिलाओगे।

नीता शर्मा
शिलोंग, मेघालय

आज के भारत की नारी

मैं स्वतंत्र भारत की नारी हूँ।
न ही अबला, न बेचारी हूँ।
देश के नियमों को ध्यान में रखती हूँ।
राष्ट्र के कानून का पालन करती हूँ।
रखती देश की खबर सारी हूँ।
मैं स्वतंत्र भारत की नारी हूँ।
संविधान पर अपने मुझे गर्व है।
देश का मतदान मेरा पर्व है ।
इन्तज़ार करती इसकी पारी हूँ।
मैं स्वतंत्र भारत की नारी हूँ।
देश की अखंडता पर मान करती हूँ।
राष्ट्रीय गान का सम्मान करती हूँ।
अध्यात्मिकता की मन में क्यारी हूँ।
मैं स्वतंत्र भारत की नारी हूँ।
तिरंगे झंडे की शान बनी रहे ।
शत्रु की आँख न इसमें गढ़ी रहे।
भारतीय सेना पे जाती वारी हूँ।
मैं स्वतंत्र भारत की नारी हूँ।।

दया शर्मा

बापू! जन्म लो फिर एक बार

बापू! जन्म लो फिर एक बार
देखो, बिखर गया तुम्हारा संसार
धूमिल पड़ी अहिंसा-ज्योत
हिंसा का फैला साम्राज्य

सत्य के लिए किया आग्रह आपने
सारा विश्व हुआ नतमस्तक आपके सामने
एकता की ताकत ने वह कर दिखाया
गुलामी की जंजीरों को तार-तार किया

अब हम आपस में लड़ते हैं
जाति, धर्म, भाषाओं में बँटते हैं
बापू! आ जाओ न फिर एक बार
देखो, बिखर गया तुम्हारा संसार।

करके निज खुशियों का त्याग
लेकर सर्व जन हिताय का भाव
बढ़ चले जब तुम्हारे दो कदम
साथ चल पड़े हजारों कदम

अब तो हर क़दम में हैं भिन्नता
विचारधाराओं में है दिशाहीनता
बापू! आ जाओ न फिर एक बार
देखो, बिखर गया तुम्हारा संसार।

राम राज्य की कल्पना बनी दिवा स्वप्न
टैक्स फ्री नमक बन गया आयोडीन
कब तक विभाजन का दुःख झेलेंगे?
कब तक माँ भारती रूदन करेगी?

जाते-जाते तुमने दिया सहारा
आज देश बस अपनों से ही हारा
बापू! आ जाओ न फिर एक बार
देखो, बिखर गया तुम्हारा संसार।

डॉ अनीता पंडा 'अन्वी'

नारी

नारी ममता की मूर्ति है।
नारी प्रेम की आपूर्ति हैं।
नारी माँ, बहन, बेटी, पत्नी है।
नारी रिश्तों की कथनी- करनी है।
नारी मानव के लिए अमृतप्रपात है।
नारी दुष्टों पर व्रजपात है।
नारी कोमल हैं कमजोर नहीं ।
नारी की शक्ति का कोई छोर नहीं।
नारी तमस के लिए घात है।
नारी रोशनी की बिसात है।
नारी मनभावन मीठी बात है।
नारी हंसती हुई कायनात हैं।
नारी उषा की सौगात है।
नारी सुरम्य सुप्रभात है।
नारी जीवंत जज्बात है।
नारी खुशियों की बारात है।
नारी जगाती जीने की आस
नारी फैलाती रिश्तों की मिठास
नारी सुख का सागर
नारी स्नेह की गागर
नारी है सृष्टि की सृजनहार
नारी से महके परिवार
नारी रब का अनुपम उपहार है।
नारी से ही चलता संसार है।

डॉ. खुशबू राठी रतलाम

पुरुष काव्य गोष्ठी की कविताएँ

जीत न पाया दिल तुम्हारा

जीत न पाया दिल तुम्हारा,
कुछ तो मुझको खलता है,
सोने का दिल है तुम्हारा,
चांदी का मेरा लगता है।

लबों पर है तुम्हारे तबस्सुम,
सौंदर्य की तुम प्रतिमा हो,
मैं तो ठहरा निपट अभागा,
दीवाना सा अब लगता हूँ।

मधुर कन्ठ से हो सवेरा,
मेरा ऐसा सपना है।
मेरे चन्दनबन में महकोगी तुम,
ऐसा मुझको लगता है,

तटबन्द बन खड़ा हूँ मैं,
मधुर मिलन की आस में
लहर बन चोट देती हो तुम,
अब ऐसा मुझको लगता है।

संजय सक्सेना
प्रयागराज

सीने का बंटवारा कैसे

जब दोनों दिल हिन्दुस्तानी,
तो सीने का बंटवारा कैसे।

सुख सुविधा जब सभी यहाँ,
तो जंगल ओर निहारा कैसे।

नाव एक पर दो हैं माँझी,
सुख दुःख के दोनों हैं साझी।

जन्म समय जब एक जाति,
तो दागी नकल उतारा कैसे।

जब एक जिगर खाना पीना,
और एक जमीं, मरना जीना।

क्रूर भाव यदि भरे नहीं,
तो दुश्मन आज पुकारा कैसे।

एक अंश से जगत भरा है,
हाथ तराजू लिए खड़ा है।

जब रहन-सहन में फर्क नहीं,
तो दिल पर पत्थर मारा कैसे।

जब दोनों दिल, हिन्दुस्तानी,
तो सीने का, बंटवारा कैसे।

राम कैलाश पाल प्रयागी
भावापुर, प्रयागराज

सूक्ष्म दृष्टि

मेरे नैनों में आ जाय शुचि तेज वह
सूक्ष्म से सूक्ष्म का दिव्य दर्शन करूँ ।
भावना भाव जो भी हृदय में मेरे
कल्पना कामना सबका वर्णन करूँ ।

वायुमण्डल में उठती तरंगें हैं जो
जिनसे जड़ देह में चेतना नित जगे ।
पीर दुखियों की रहती जो अन्तर्निहित
वेदना वह मुझे नित्य अपनी लगे ।
शक्ति इतनी कहाँ दूर कर दुख सकूँ
किन्तु जो कुछ मेरे पास अर्पण करूँ ।।

जग समझता रहा मात्र भोग्या जिसे
झाँक पाया नहीं उसके उर में कभी ।
क्षीरसागर की उत्ताल लहरें जहाँ
बन सुधाकर छिपे सौम्य गुण हैं सभी।
मूर्ति करुणा दया प्रेम की जो सुघर
वाणी मन कर्म से उसका अर्चन करूँ।

देख पाऊँ भले नहि वृहत् रूप को
तन की मलयज सुरभि घ्राण करता रहूँ।
हूँ अनश्वर नहीं किन्तु प्राणी तो हूँ
साँस स्वर में सदा प्राण भरता रहूँ ।
देख संजीवनी प्रेरणादायिनी
स्नेह से सिक्त मैं नित्य कण- कण करूँ।

भावना भाव जो भी हृदय में मेरे
कल्पना कामना सबका वर्णन करूँ।।

डॉ. वीरेन्द्र कुमार तिवारी

हिन्द और हिन्दी

हिन्द गीत, गाएँ हम, हिन्दी बतलाइए।
भारत की, जय माता, बोलें समझाइए।।
दीप जले, बहुत दूर, हिन्द नाप आइए।
ज्ञान बीच, हो प्रकाश, मोल सब चुकाइए।।1।।

शान देश, मान देश, बोध जरा कीजिए।
तात मात, जात पात, शरण हमें लीजिए।।
बोधिसत्व, ज्ञान दीप, बुद्धि हमें दीजिए।
ऊँच-नीच, भेदभाव, रूप गर्व खींचिए।।2।।

ज्योति-पुञ्ज, हिन्द देश, भाष देवनागरी।
कालकूट, पान किया, बीतती विभावरी।।
नील गगन, देख रहा, श्यामला सुभावरी।
बैर खात, पुलक मात, नीलिमा कुजागरी।।3।।

अंग अंग, पिये भंग, मस्त चाल चाल है।
शीश चढ़ा, हिन्द देश, उच्च भाल भाल है।।
बैरियों को, डाँट रहा, किया क्या कमाल है।
लालिमा की, भूमि वरी, हिम आलय ढाल है।।4।।

विश्व पटल, देख रहा, गर्व आप कीजिए।
योगदान, अपना भी, आप यहाँ दीजिए।।
रोजगार, अपना खुद, ढूँढ ढाँढ लीजिए।
औरों की, राह बनो, कुशल क्षेम कीजिए।।5।।

कोस कोस, मील मील, जोतता किसान है।
हिन्द देश, बढ़ा हुआ, ज्योत्सना महान है।।
भारतीय, हर्ष भरा, देश विकसमान है।
भाषा की, लोकरीति, गा रहा जहान है।।6।।

दान पुण्य, धरा नीति, आप जान लीजिए।
राम श्याम, देवभूमि, हिन्द मान कीजिए।।
पूछ रही, कौन यहाँ, बावरी को जानिए।
सेंध काट, कोंद रही, बला हार ठानिए।।7।।

हिन्दी की, शान रोज, रोज गीत गाइए।
हिन्द सेतु, दूर देश, मिलकर फहराइए।।
मान ध्यान, पाप-पुण्य, उपवन चमकाइए।
ज्ञान वान, हर जवान, श्रृंखला बढ़ाइए।।8।।

भक्तिभाव, हर्ष मान, भारत में कीजिए।
सम्पदा का, शेष भाग, पुण्य हेतु दीजिए।।
हिन्द देश, साधु वेश, गौरव भी लीजिए।
हिन्दी का, देवगान, सकल विश्व कीजिए।।9।।

पंडित राकेश मालवीय मुस्कान,
प्रयागराज - 16

साहित्य - चेतना

साहित्य है दर्पण समय का, सत्य इसको दीजिए।
सबके हृदय की वेदना, करुणा की बातें कीजिए।।
कभी एक वर्ग पढ़ा - लिखा, निज प्रेम ही लिखता रहा।
कुछ लोग जो सुनते रहे, उनकी फिकर अब कीजिए।।
हाशिए पर की लिखी, तहरीर अब चर्चा में है।
उसके लिए भी रास्ता, आसान - सा एक दीजिए।।
आलोचको! हर पुष्प देखो, सृजन के इस चमन का।
तेरी भूमिका माली की हो, मत लकड़हारा कीजिए।।
गीत - कविता की लहर, सबके हृदय में है दबी।
रस- भाव - शब्द श्रृंगार देकर, तब उजागर कीजिए।।
क्या लिख रहे? किसके लिए? क्या भाव देना चाहते।
कविवर! सरस साहित्य का,
कुछ व्याकरण पढ़ लीजिए।।
आपकी रचना कोई, गर चाहते जीवित रहे।
'मुकुल' उसमें सृजन - सेवा का हुनर भर दीजिए।।

शिवराम उपाध्याय 'मुकुल मतवाला'
प्रयागराज

आस्तीन का साँप

दूर नहीं सन्निकट है,
आस्तीन का साँप ।।
कभी कहीं भी साथ न छोड़े।
टूटे दिल को फिर से तोड़े ।
बरसाता आफत के कोड़े ।
राहत की हर साँस को ।
लेता है वो भाँप ।।
दूर नहीं सन्निकट है,
आस्तीन कासाँप ।।

खान-पान व्यव्हार में ,
राजनीति दरबार में ।
देता है संकेत वो,
आवागमन,विहार में ।
सोता नहीं है एक पल,
लेता नहीं वो झाँप। ।
दूर नहीं सन्निकट है,
आस्तीन का साँप ।।

दिल में घुल-मिल जाता है।
सब्ज़ बाग दिखलाता है ।
दिशा हीन पहले कर देता,
तब फिर मार्ग बताता है ।
सर पर चढ़ कर एक दिन ,
बन जाता है बाप।।

भ्रमित बुद्धि कर देता है ।
सब सुख को हर लेता है।
मोह-पाश में बाँध कर ,
विष ही विष भर देता है ।
देख दशा विकराल यह ,
मन जाता है कांप ।।
दूर नहीं सन्निकट है ,
आस्तीन का साँप ।।

शम्भूनाथश्रीवास्तव'' शंभु'

मुफ्त इलाज-मुफ्त दवाएं बेहतर हुई स्वास्थ्य सुविधाएं

बीते 7 वर्षों में उत्तर प्रदेश सरकार का फोकस चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने पर रहा है। आमजन को इलाज की सुविधा उनके घर के आस-पास ही मिल सके इसके लिए पीएचसी, सीएचसी एवं जिला अस्पतालों को दवा, मेडिकल इक्विपमेंट्स से लैस किया गया है। डॉक्टर्स एवं पैरामेडिकल स्टाफ की तैनाती एवं कार्यस्थल पर उनकी उपस्थिति सुनिश्चित की गई है। आयुष्मान भारत योजना, सुरक्षित मातृत्व योजना, राष्ट्रीय टीकाकरण अभियान जैसे कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन किया जा रहा है। प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्रों के माध्यम से जेनेरिक दवाएं सस्ते दाम पर मिल रही हैं। राज्य में मेडिकल डिवाइस पार्क, बल्क ड्रग पार्क और मेडटेक पार्क मूर्त रूप ले रहे हैं। मुख्यमंत्री आरोग्य मेलों में जनमानस को उच्च गुणवत्तापूर्ण इलाज की सुविधा उपलब्ध करायी जा रही है। यूपी को इंसेफेलाइटिस की रोकथाम, कोविड प्रबंधन के लिए वैश्विक संस्थानों से सराहना मिली है।

आयुष्मान भारत योजना के 9 करोड़ लाभार्थियों को प्रति परिवार ₹5 लाख का चिकित्सा बीमा, देश में सर्वाधिक 5.11 करोड़ से अधिक आयुष्मान कार्ड वितरित

- एक जनपद-एक मेडिकल कॉलेज मिशन के अंतर्गत 65 मेडिकल कॉलेज संचालित, 22 मेडिकल कॉलेज निर्माणाधीन
- सत्र 2024 से 7 नये मेडिकल कॉलेजों बिजनौर, बुलंदशहर, कानपुर देहात, कुशीनगर, ललितपुर, पीलीभीत एवं सुल्तानपुर का संचालन आरंभ
- गोरखपुर व रायबरेली में एम्स का संचालन
- मुख्यमंत्री आरोग्य स्वास्थ्य मेलों में 12.48 करोड़ लोगों का उपचार
- मई 2024 तक ए.ई.एस. एवं जे.ई. मृत्यु दर घटकर शून्य प्रतिशत हुई
- गंभीर बीमारी से ग्रसित लोगों के उपचार हेतु ₹3200 करोड़ से अधिक की आर्थिक सहायता
- सरकारी क्षेत्र में 4550 एमबीबीएस सीट तथा निजी क्षेत्र में 5600 एमबीबीएस सीट, पीपीपी मोड की 3 5 0 एमबीबीएस सीटें उपलब्ध
- एमडी/एमएस/डिप्लोमा सीटों की संख्या 900 से बढ़कर 1543, निजी क्षेत्र में कुल 1775 पीजी सीटें
- नर्सिंग में 7000 तथा पैरामेडिकल में 2000 सीटों की वृद्धि
- लखनऊ में अटल बिहारी वाजपेयी चिकित्सा विश्वविद्यालय और गोरखपुर में महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय की स्थापना
- अयोध्या में राजकीय आयुर्वेदिक महाविद्यालय का निर्माण
- वाराणसी में राजकीय होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज की स्थापना
- मिशन निरामया: के अंतर्गत 300 संस्थाओं में नर्सिंग/पैरामेडिकल पाठ्यक्रम
- सभी सीएचसी एवं पीएचसी में स्थापित हो रहे हेल्थ एटीएम
- 22555 आरोग्य मंदिर की स्थापना
- सभी जनपदों में निःशुल्क डायलिसिस की सुविधा

एम्बुलेंस सेवा

102 के अंतर्गत	108 के अंतर्गत
2270 एम्बुलेंस संचालित	2200 एम्बुलेंस संचालित
170 मोबाइल मेडिकल यूनिट संचालित	250 ए.एल.एस. एम्बुलेंस संचालित

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश